International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 366-367

ब्रज की आदिकालीन मूर्तिकला

प्रीती सिहं

एम0 जे0 पी0 रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

ब्रज का पुरातन नाम शूरसेन था, जिसकी गणना प्राचीन काल में भारतवर्ष के सोलह बड़े जनपदों में की जाती थी। उक्त शूरसेन जनपद के आदि कालीन स्थापत्य और उसकी मूर्तियों के संबंध में हमें जो कुछ जानकारी मिलती है, वह अधिकतर प्राचीन अनुश्रुतियों, परंपरागत किवदंतियों तथा रामायण, महाभारत, पुराण, देवता हरिदेव, बलदेव, गोविन्ददेव और केशवदेव की आरम्भिक मूर्तियाँ भी ब्रजनाथ द्वारा ही प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। इतिहास एवं पुरातत्व से उक्त अनुश्रुति की प्रामाणिकता सिद्ध नहीं होती है, किन्तु उसमें इतना तथ्य आवश्यक जान पड़ता है, कि ब्रजनाथ ने श्री कृष्ण के लीला–स्थुलों का अन्वेषण कराया था। संभव है, वहाँ पर उसने कृष्ण लीला से सम्बन्धित किसी प्रकार की मूर्तियों अथवा प्रतिकात्मक चिन्ह भी प्रतिष्ठिता किये हो। अब तक के पुरातात्विक अन्वेषण में ब्रज के किसी स्थल से श्री कृष्ण लीला सम्बंधी उस काल की किसी प्रकार की मूर्ति अथवा प्रतिकात्मक चिन्ह नहीं मिले, जबकि अन्य स्थानों से उनके कुछ ध्वंसावशेष मिल चुके हैं।

मोहनजोदड़ों की खुदाई में भी श्री मैके को तीन लंबोतरी गुटिकाएँ मिली थी, श्री कृष्ण की ''यमलार्जन लीला'' जैसे माना है। भागवतादि पुराणों की कथा है कि नारद मणिग्रीव अर्जुन ने दो जुड़वा वृक्ष(यमलार्जुन) हो गये थे, जिनका उद्धार बालक कुष्ण ने किया था। इन लंबोतरी गुटिकाओं द्वार पुराण दिया गया है। उसी स्थल की खुदाई में जो अन्य प्रकार की कलाकृतियाँ मिली हैं, उनमें ताँबे के कुछ टुकड़े ओर विविध प्रकार की मुद्राएँ भी हैं। ताँबे के वे टुकड़े मानव की अनगढ़ आकृतियों जैसे है, जिन्हें संभवतः उपासना और पूजा के लिए बनाया गया होगा। ऐसी एक मुद्रा पर पशुओं से घिरे हुए पुरूषों की त्रिमुखी आकुति अंकित है, जिसे पशुपति शिव की आदिम मुर्ति माना गया है। इनके साथ भूमि स्पर्श मुद्रा में पघासन लगाये हुए तथा नासाग्रदृष्टि किये हुये साधको की आकृतियाँ भी हैं, जिनसे जैन तीर्थकरों की मूर्तियों के पर्व रूप का अनुमान किया गया है।

ब्रज क्षेत्र से अभी तक जितनी मूर्तियां उपलब्ध हुई हैं, उनमें सर्वाधिक प्राचीन यहाँ के लोक–जीवन से संबंधित है। वे या तो मिट्टी की बनी हुई छोटी प्रतिमायें

है या पाषाण–निर्मित विशाल मूर्तियाँ। दोनों की कला लोकधर्मी हैं, और अविकसित हैं। इनमें पाषाण मूर्तियों की अपेक्षा मृण्मूर्तियाँ अधिक प्राचीन हैं।

मृण्मूर्तियाँ

ये मूर्तियाँ चिकनी मिट्टी की बनी हुई हैं, और इन्हें टूटने से बचाने के लिये अग्नि में पका लिया गया है। इनमें से प्राचीनतम मूर्तियाँ महिला– आकृतियों की संभवतः मातादेवी की हैं। इन्हें सांचों की सहायता के बिना ही हाथों से गढ़कर बनाया गया है। ये अधिकतर सलेटी रंग की हैं, कुछ पर काली पालिश भी है। इन मूर्तियों का मुख मानव का न होकर पशु–पक्षियों सा है, और इनकी आँखे उकेरी हुई हैं। इनके शरीर प्रायः नंगे हैं और उन पर गोल निशान हैं। कुछ मूर्तियों के गुप्तांगों को ढकने के लिए करधनी जैसे आभूषण बनाये गये हैं। इनके कानों में मोटी बालियाँ ओर गले में मोटा कंठा है, जिन्हें गढ़ने की अपेक्षा अलग से चिपकाकर लगाया गया है। इनका उपयोग या तो सामान्य मूर्तियों की भाँति बच्चों के खेलने एवं घरों को सजाने के लिए होता होगा, अथवा इन्हें पूजनीय मूर्तियों के रूप में उपासना–स्थलों एवं पूजनालयों में प्रतिष्ठित किया जाता होगा। इनका निर्माण–काल अनुमानतः वि0 पू0 6वीं–7वीं शदी के लगभग माना गया है।, जिनमें से दो(सं0 27–28, 1646 और 33, 2344) उल्लेखनीय है। इन्हें मथुरा संग्रहालय मृण्मूर्ति–विधि के दो कक्षों में प्रदर्शित किया गया है।

प्रायः 12 शताब्दियों की मूर्ति कलात्मक गतिविधियों से संबंधित है। इस काल में वर्णित घटनाएँ प्राचीन अनुश्रुतियों, परंपरागत, किवदंतियों तथा पौराणिक उल्लेखों के स्थान पर है। इसलिए उनकी प्रामाणिकता असंदिग्ध है। इस काल में ब्रज की प्रायः समस्त कलाओं की निभ्रांत रूप से उन्नति हुई थी। विशेष्ता प्राचीन स्थापतय एवं मूर्ति कलाओं का तो यह स्वर्ण युग ही था। इस काल के कुषाण एवं गुप्त एवं मूर्ति कलाओं का तो यह स्वर्ण युग ही था। उसके कारण प्राचीन ब्रज ओर उनकी राजधानी मथुरा नगर को मूर्ति कला का भारत प्रसिद्ध केंद्र होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

श्री कृष्ण के अलौकिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व और उनके क्रान्तिकारी तथा लोककल्याणप्रद उपदेशों से प्रभावित होकर उनके समय में ही अनेक विशिष्टि व्यक्ति उन्हें अवतारी महापुरूष मानते हुए उनके अनुगामी हो गये थे। वे लोग श्री कृष्ण द्वारा प्रचारित जिस धर्म को मानते थे, उसे साश्वत, पंचराज, एकातिक और भागवत धर्म कहा गया है। वे नाम एक ही मूल धर्म से संगधित थे, और वासुदेव–कृष्ण की उपासना के विविध रूपों को लेकर प्रचलित हुए थे। अंत में उन सबका समाहार ''भागवत धर्म में हो गया और वही वासुदेवोपासना का एक मात्र प्रतिनिधि धर्म माना जाने लगा।

श्री कृष्ण के पश्चात् इस देश में जो युगांतरकारी मधपुरूष हुए, उनमें बुद्ध और महावीर के नाम से सर्वाधिक प्रसिद्ध है। ये दोनों महानुभाव श्री कृष्ण की तरह प्राचीन ब्रज में उत्पन्न न होकर भारत के पूर्वी भाग में हुए थे, किन्तु उनकी क्रांतिकारी विचार–धाराओं से इस देश के अन्य राज्यों की भाँति यह भू–भाग भी प्रचुरता में प्रभावीत हुआ था। भागवत, बौद्ध और के साथ–साथ प्राचीन ब्रज में वैदिक एवं पौराणिक धर्मोपासनाएँ और उनसे अनुप्राणित शैव तथा शाकत धर्म भी प्रचलित थे। उनके अतिरिक्त मातृकाओं, यक्षों नागों आदि की लोकोपासनाओं के धार्मिक संप्रदायों का भी प्रचार था। उन समस्त धर्म–संप्रदायों ने प्रस्तुत काल में ब्रज की प्रायः सभी कलाओं को प्रभावित किया था। विशेषयता उस युग के

अपासनालयों की स्थापत्य कला और उपास्य प्रतिमाओं की मूर्ति कला पर तत्कालीन धर्मोपासनाओं से संबंधित परंपराओं एवं मान्यताओं की सुदृढ़ छाप दिखलाई देती है।

बुद्धकाल से मौर्य पूर्व काल तक शूरसेन में प्राप्त कलाओं का विशेष उल्लेख नहीं केवल काले और लाल रंग तथा काफी चमकदार पालिश के मृणपात्र मिलते हैं जो सोख के टीले की खुदाई से प्राप्त हुए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एस.के. धवलिकर : मास्टर पीसेस ऑफ इण्डियन टेराकोटा।
2. एस.पी. गुप्त : कुषाण स्कल्पचर्स फ्राम संघोल जिल्द।
3. पार्जीटर : एन्शियन्ट इण्डियन हिस्टोलिटिकल ट्रेडिशन्स।
4. कनिंघम : एन्शियन्ट ज्यागरफी ऑफ इण्डिया।
5. एम.के . धवलिकर : लेट हीनयान केव्स ऑफ बेस्टर्न इण्डियां।
6. राय कुष्णदास : भारतीय मूर्ति कला ।
7. जितेन्द्रनाथ बनर्जी : द डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दू।